Career Point International Journal of Research (CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10312190

सिनेमा समाज का दर्पण– गांधी दर्शन और राजनीतिक परिपेक्ष्य में।

सुनयना दाधीच

रिसर्च स्कॉलर कैरियर प्वाइंट यूनिवर्सिटीए कोटा

परिचय ऐसे महापुरूष वसुधा पर कभी – कभी ही आते है जो मानवता के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देते है। महात्मा गांधी भारतीय जनमानस और भारतीय संस्कृति के वह युगचेता पुरूष है जिसके लिए प्रत्येक भारत वासी तथा भारत वर्ष की धरा सदैव अनुग्रहित रहेगी। महात्मा गांधी के विचारों ने न केवल भारतीय जनमानस को अपितु भारतीय सिनेमा पटल को भी प्रभावित किया। भारत वर्ष का कोई भी क्षेत्र ऐसा नहीं है जिसमें गांधी विदृयामान ना हो। तत्कालीन परिवेश में भी गांधी जी का प्रभाव चहुॅओर दिखलाई पड़ता है। सिनेमा में भी गांधी की आस्थाएॅ, उनके सिदृांत और मूल कथानक और चरित्रों का मुख्य उपजीव्य बन रहे थे।

सर्व विदित है कि जनमानस पर सिनेमा गहरा प्रभाव डालता है। यह असर इसलिए है कि कहीं न कहीं फिल्मों के विषय हमारे – आपके बीच से ही तय होते है। प्रथम फिल्म "गुड मॉर्निंग इण्डिया " वन्दे मातरम्, बंदे मे है दम। द्वितीय फिल्म– काहे की हम सिनेमा नहीं देखते, हिन्दुस्तान में जब तक सिनेमा है लोग फिल्में देखते रहेगें, जब तक इस देश में फिल्में है, लोग मूख बनें रहेगें। प्रथम फिल्म में अत्यन्त विनम्र और शालीन दुनिया को दिखाया गया, द्वितीय फिल्म में राजनीति की कठोर दुनिया में डूबा समाज दिखाया गया है। एक अत्यन्त सरल दूसरी जटिल। महात्मा गांधी के राजनतिक आदर्शो को दर्शाती फिल्मों ने बहुत सरलता से सत्य, शान्ति, प्रेम, सत्यागृह, सर्वोदय जैसे आदर्शो को स्थापित किया। गांधी और उनकी विचार धारा का प्रभाव सदैव से हिन्दी सिनेमा पर नजर आता हैं। दादा साहब फाल्कें, वी शांताराम, महबूब खान, राजकूपर से लेकर विधुविनोद चौपड़ा, राजकुमार हीरानी तक दर्जनों फिल्मकार है जिन पर गांधीवादीं विचारधारा का असर स्पष्ट नजर आता है।

महात्मा गांधी अहिंसा के पूजारी थे। यह राजनीति के माध्यम से भी अहिसंक समाज के पक्षकार रहे। यही कारण है कि जो सिनमे ा गांधीवादी विचारधारा से प्रभावित वह अत्यन्त उज्ज्वल, स्वच्छ व सरल बनें। इन फिल्मों द्वारा दिये गय` संदेश को आमजन ने सहजता से आत्मसात किया। महात्मा गांधी की राजनीतिक सभाएँ सर्वधर्म प्रार्थना से शुरू होती थी। जो लोगों को एक– दूसरे के धर्मो तथा आपसी विविधता का सम्मान करने के लिए प्रेरित करती थी। यह प्रभाव सिनमे ा में भी दिखा दशे में प्रथम फिल्म 1913 में प्रदर्शित होने के साथ अंसख्य फिल्में बनाई गयी। गांधी वादी विचाराधारा से प्रभावित फिल्मों मे प्रेम व बलिदान, हिन्दु मुस्लिम एकता, नगरीय व ग्रामीण शैली में अंतर, अंधी व्यावसायिकता का विरोध, नारी उद्धार, नैतिक पतन कि चिंता जैसे गांधीवादी विचार प्रस्तुत किये गये। हिन्दी सिनेमा में राजनीतिक भारत के पहचाने जाये योग्य टुकड़े है जो समानान्तर दो विचारधाराओं हिसां और अहिंसा पर आधारित हैं। स्वंतत्रता संग्राम की विरासत फिल्म जागृति (1954) और अब दिल्ली दूर नही (1957) जैसी फिल्में की विलक्षण मासू मियत से स्पष्ट है। "साबरमती के सतं तनू` कर दिया कमाल रघुपति राघव राजा राम" , "हम लाये हे तुफान से कश्ती निकाल के इस देश को रखना मेरे बच्चों संभाल के" आज भी देशभक्ति के स्वर सरिता में हमें डूबो देते हैं। लेकिन आजादी के बाद भारत में एक नया गणतंत्र आकार ले रहा था।

विमल राय की दो बीघा जमीन (1953) कृषि ऋणगस्तता में फंसे ग्रामीण भारत की दुर्दशा और ग्रामीण संकट के प्रति राज्य की उदासीनता पर एक टिप्पणी था। जो अन्योदय व सर्वोदय की विचारधारा से प्रभावित थी। भारत में पंचायती राज्य शासन व्यवस्था को कानुनी आधार प्रदान करना इसी फिल्म का प्रतिउत्तर रहा होगा। फिल्म नयादौर के साथ पंचवषीय योजनाओं को सिनेमाई रूपरेखा तैयारी हुयी। " एक गांधीयन अफेयर इंडियाज क्यूरियस पोर्टल आफ लब इन सिनेमा। " पुस्तक में प्रवासी भारतीय पत्रकार संजय सूरी लिखते है चाहे वह राजकूपर, शम्मी कूपर, देवानन्द या मनोज कुमार, दिलिप कुमार हो, वे सभी अपने चरित्रों में राष्ट्रपिता की छवि को उकेरने की कोशिश करते दिखते है वे सांसारिक प्रलोभनों से लड़ते व जीतते दिखलाई पड़ते हैं।

Career Point International Journal of Research (CPIJR)
©2022 CPIJR | Volume 3 | Issue 2 | ISSN: 2583-1895
September -2023 | DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.10312190

द` दी हमे आजादी बिना खड्ग बिना ढा ल ं साबरमी के संत तूने कर दिय कमाल राजनीति का सरल गांधीवादी स्वरूप 70 के दशक मे राजनीतिक उथल पुथल के कारण अशांत एंग्रीमेन के रूप में परदे पर आने लगा। आजाद हुॅ (1989), बेंडिट क्वीन (1994), माचिस (1996), बॉम्बे (1995), हजार चौरासी की मॉ (1998), हासिल (2008), गंगाजल (2003) , राजनीति (2010), गुलाल (2009) फिल्मों के राजनीति चित्रण ने समाज को अशांत व हिसंक कर दिया। आमजन ने राजनीति से दरूी बना ली।

1990 के दशक में आर्थिक उदारवाद की प्रक्रिया न` सिनेमा के प्रति आमजन की धारणा बदल दी। सिनेमा प्रेमियों के लिए सादा जीवन उच्च विचार जैसे महात्मा के विचारों का कोई खास महत्व नही ं रहा। द मेॅकंग ऑफ महात्मा (1996) और हे राम (2000) न` न राजनीति को नाहीं राजनीति ने फिल्म को ही प्रभावित किया। इन फिल्मों में कमजोर होते अहिंसक आंदोलन में गांधी के विचार मजबूती से खड़े दिखायी दिये। गांधी 1982 सर रिचर्ड एटनबरों की फिल्म जो प्रदर्शन के साथ ही सम्पूर्ण विश्व की फिल्म बन गयी। महात्मा गांधी के जीवन संघर्ष और उनके दृवारा अहिंसा को अपना सबसें बड़ा हथियार बनाने की कहानी को बड़े ही जीवंत तरीके से चित्रित किया गया।

फिल्म के एक दृश्य में "गांधी कहते है" जनता की राजनीतिक सीमा है रोटी और नमक, जनता का मतलब 7 लाख दहे ात, न की दिल्ली, मुम्बई में बैठे कुछ नेता और वकील। जब तक हम खेतों में ना जाए, जब तक किसानों के साथ धूप में खड़े ना हो हम सच्चे जन–प्रतिनिधि नहीं हो सकते।

बहुत योजनाबदृ ढगं से इन फिल्मकारों ने गांधी दर्शन को आत्मसात् किया। यह गाांधी संदेश का अपरोक्ष प्रभाव था, जो उनकी आने वाली फिल्मों में उतर आया और व्यावसायिकता सफलता का सूत्र भी बना। गांधीवाद आखिरकार हमारे जन–जन के मानस में जो बस गया

था। जन–मन को गुदगुदाती फिल्म लगे रहो मुन्ना भाई (2010) हर युवा और बाल भारत के जुबान पर चढ़ी । गांधी वाद से गांधीगिरी की यात्रा तक इस फिल्म ने समाज को एक नया सदेंश दिया।

महिला सशक्तिकरण की बात उठाती फिल्मों पर भी गांधी का प्रभाव देख जा सकता है। 1936 में शातारांम की अमर ज्योति में नायिका अपने शराबी पति को नशामुक्त करने का बीड़ा उठाती हैं तत्कालीन पुरूष प्रधान समाज में यह एक इंकलाबी विचार था, जो महात्मा गांधी की शिक्षा पर आधारित है।

कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि 21वीं सदी में पुनः सिनमा राजनैतिक समाज का दर्पण बन कर सामने आया। भारतीय सिनेमा लोकतांत्रिक राजनैतिक कथा परिदृश्यों से बच न सका। सत्यगृह, यंगिस्तान द एक्सीडेटल प्राईम मिनिस्टर, न्यूटन, आर्टिकल 15 भारतीय राजनीतिक समाज और पात्रो के अटुट सम्बन्ध को दृश्यमान बनाते है। आजादी के बाद के 7 दशकों में राजनीतिक मंथन, सामाजिक जटिलता, आर्थिक परिचक्र के साथ हिन्दी सिनेमा का सामना क्षणिक गुदगुदाती झलकियों और गहन विषयों तक से हुआ।

आज युक्रेन और रूस की लड़ाई ने विश्व में अशांत माहौल उत्पन्न कर दिया। हिंसा जब उग्र हो अदृश्य साम्रात्यवाद को बढ़ा रही है। ऐसे में गांधी के विचारों की आवश्यकता बढ़ जाती है। भौतिक चकाचौंध में समाज आत्मीय सुकून खो रहा है। इस रिवेश में अहिंसक सद्भाव व अपनापन ही ऐसे जीवन मूल्य हो सकते है जिसमें विश्व की कोमल भावनांए एक दूसरे को सहेज सके। अतः वैश्विक जनमानस को महात्मा गांधी के सिद्दान्तों की सबसे ज्यादा जरूरत हैं भारतीय सिनमे ा ने महात्मा गांधी के वैचारिक मूल्यों के माध्यम से विश्व – समाज को जो भी अवदान दिया व निश्चित रूप से अविस्मरणीय रहेगा। इन फिल्मों का प्रदेय यह रहेगा कि जब – जब भी कोई भारतीय इन्हें देखेगा तो उसे अपने देश की अस्मिता और गौरव पर अभिमान करेगा।

महान वैज्ञानिक आइंस्टीन ने कहा था " भविष्य की पीढ़ियों को इस बात पर विश्वास करने में मुश्किल होगी की हाड – मांस से बना ऐसा कोई व्यक्ति भी धरती पर आया था। क्या अंग्रेज, क्या नेल्सन मंडेला, क्या बराक औबामा, क्या चार्ली चेप्लीन, क्या दलाईलामा, क्या संयुक्त राष्ट्र संघ, गांधी अंत तक शांती व प्रेममयी मूल्यों की समझ व प्रेरणा स्वंय, पुस्तकों व सिनेमा के माध्यम से हम भारतवासियो व सम्पूर्ण वैश्विक समुदाय को देते रहेगें।

सन्दर्भ

1. गांधी की प्रासंगिकता (सिनेमा पर और सिनेमा में गांधी) – अकुल त्रिपाठी (2015)
2. हिंदी सिनेमा में राजनीति का विचार – आंनद वर्धन (2018)
3. भारतीय सिनेमा पर गांधी का प्रभाव – रशीद किदवई (2019)
4. महात्मा गांधी सिनेमा और संवेदनाएं – डॉ0 राकेश कुमार (2020)
5. गांधी और विश्व सिनेमा – डॉ0 विजय शर्मा (2022)